सौन्दर्य का आश्चर्य लोक

संपादक

डॉ. मनीषा

Rsethi

23

सविता सिंह की कविताएँ वैकल्पिक दुनिया का स्वप्न

– रेखा सेठी

हिंदी की जिन कवयित्रियों ने समाज के स्थापित ढाँचों को कुछ इस तरह चुनौती दी कि साहित्य की लब्ध–प्रतिष्ठ अविरल धारा में एक नया मोड़ उपस्थित हुआ, उनमें सविता सिंह का नाम सम्मान के साथ लिया जायेगा। उनकी कविताएँ लिंगाधारित असमानता के खिलाफ जिरह खड़ी कर एक नयी दुनिया की तस्वीर पेश करती हैं जो अधिक मानवीय, समानधर्मा और स्वतंत्र होगी। अपने पहले काव्य संग्रह 'अपने जैसा जीवन' की कविता 'मैं किसकी औरत हूँ' में कवयित्री ने स्त्री–स्वतंत्रता की नई जमीन गोड़ते हुए मानो घोषणा की थी–

"मैं किसी की औरत नहीं हूँ
मैं अपनी औरत हूँ

× × × ×

मैं किसी की मार नहीं सहती
और मेरा पमेश्वर कोई नहीं

× × × ×

उन्मुक्त हूँ देखो,
और यह आसमान
समुद्र यह और इसकी लहरें,
हवा यह

और इसमें बसी प्रकृति की गंध सब मेरी हैं,
और मैं हूँ अपने पूर्वजों के शाप और अभिलाषाओं से दूर
पूर्णतया अपनी 1.

इस कविता ने आलोचना के तत्कालीन प्रतिमानों में व्यवधान उपस्थित किया। 'आत्मसजगता' और 'अस्वीकार' इस टोन को साहित्य जगत को गंभीरता से लेना पड़ा। यह कविता सविता ने अनेक मंचों पर पढ़ी और स्वयं को घोषित तौर पर स्त्रीवादी कवयित्री कहा। उनसे पहले की स्त्री रचनाकार जहां जेंडर के सवाल पर विनम्रता या शालीनता का आवरण ओढ़ अपनी पहचान स्त्री होने से पहले एक व्यक्ति के रूप में करना और करवाना चाहती थीं वहाँ इन कविताओं ने जैसे 'कनक घट का ढक्कन' उठा दिया था। सविता ने जिस सजग ढंग से सामाजिक संबंधों की पड़ताल की, पितृसत्तात्मक व्यवस्थाओं को प्रश्नांकित किया, उससे 'स्त्री होने के संकट' का बोध कवि और पाठक दोनों को समान रूप से होने लगा। उनकी कविताएँ उसी संकट और उससे उन्मुक्तता के अहसास को एक साथ पैदा करती हैं। 'अपने जैसा जीवन' से जो काव्य यात्रा शुरू हुई उसका विकास बाद के दो संग्रहों– 'नींद थी और रात थी' तथा 'स्वप्न समय' में दिखाई पड़ता है। स्त्री–स्वतंत्रता के विचार से विकसित उनकी अधिकांश कविताओं में स्त्री के सवाल कुछ ऐसे उठाये गए हैं कि उनके लिए 'स्त्रीवादी' विशेषण नाकाफी हो जाता है,कवयित्री मानो एक गहरे आत्म–मंथन से गुजर रही है जिसमे एक ओर परंपरा–प्रदत्त 'स्त्री–अनुभव' से मुठभेड़ हो रही है तो दूसरी ओर, उससे कहीं अधिक शिद्दत से स्त्री–भविष्य का मान–चित्र निर्मित हो रहा है।

सविता सिंह उस पीढ़ी की रचनाकार हैं जिन्हें लिंग–भेद पर आधारित सामाजिक अंतर्विरोध विरासत में मिले हैं। यहाँ कुसुम, सुप्रिया, विमला रोजमरी, सारा·रुथ, ऐलन के वो चेहरे हैं जो बार–बार इस समाज में छली गईं। ये नाम और चेहरे वो असंख्य दस्तावेज हैं जहाँ स्त्री के सांस्कृतिक प्रतीक उसके 'स्व' के विसर्जन का उपादान बन गए। इस अर्थ में ये कविताएँ इतिहास की निरंतरता में स्त्री शोषण के ठोस सन्दर्भों को सामने लाती हैं। स्त्री के दु:ख और अपमान का पलड़ा हमेशा भारी रहा ￼अपने रक्तरंजित इतिहास पर रोने की फुर्सत स्त्री को कब मिली लेकिन वही स्त्रियाँ औरों के लिए विलाप करती बैठी रहीं–

बैठीं हैं एक साथ

गठरी बन
बिसूरती
रोती विलाप करती स्त्रियाँ
करती शापित पूरे इतिहास को
जिनमें उनके लिए अँधकार का मरुस्थल छिपा है 2.

ये सारी छवियाँ हमारे आस–पास की पहचानी हुई हैं। यह पहचान और भी गहरी हो जाती है जब कवयित्री इस पीड़ा को माँ और नानी के सशंक चेहरों में ढूँढने की कोशिश करती है। यहाँ जिम्मेदारियों और श्रम से झुकी पीठे हैं, शर्म से गड़ी गर्दन है जो अपने किसी अपराध के लिए नहीं झुकी बल्कि तमाम सभ्यताओं में झूठ और अनाचार भरे एक जैसे षड्यंत्रों द्वारा झुकाई गई है। 'कुसुम' और 'विमला' का स्त्री–अनुभव 'रोजमरी' और 'ऐलन' के अनुभव से ज्यादा भिन्न नहीं है। यहाँ कवयित्री समय–इतिहास, देश–विश्व की सीमाएँ लाँघकर स्त्री होने के संकट को एक नए स्तर पर अर्जित करती है–

स्त्रियों तुम जहाँ भी हो
जिस सदी और देश में
तुम्हे अपने पूर्व जन्म सा मैं कविता में पा लूंगी।[3]

ये सारे सन्दर्भ उस पितृसत्तात्मक संरचना को उभारते हैं जहाँ स्त्री को स्त्री होने के कारण उसके मानवीय अधिकारों से भी बेदखल कर दिया जाता है। 'प्रेम करती बेटियाँ', 'याद रखना नीता', 'क्यों उदास होती हो सुमन'–ऐसी अनेक कविताएँ हैं विशेषतः पहले दो संग्रहों–('अपने जैसा जीवन' और 'नींद थी और रात थी') में जो अत्यंत सटीक रूप से पारिवारिक व्यवस्था में मिलने वाली यातना के बिंब सामने लाती हैं। इन कविताओं को उद्धृत करने का लोभ संवरण करना पड़ रहा है क्योंकि इनकी संख्या बहुत अधिक है लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि इनमें स्त्री का जो बिंब उभरता है वह स्त्री की स्थिति के समाजशास्त्रीय अध्ययन का महत्वपूर्ण दस्तावेज बन सकता है। उसमें सदियों का अलिखित इतिहास, परम्परा, परिवार और प्रेम के दंश शामिल हैं।

सविता जिस मुक्ति या समानता की बात करती हैं वह यथार्थ के बाह्य ठोस सन्दर्भों से प्रेरित है लेकिन उनके यहाँ यथार्थ केवल परिवेश नहीं है वह अंतर्मन की परतों से लिपटकर एक नया सन्दर्भ ग्रहण कर लेता है। इस दृष्टि से उनकी प्रेम पर लिखी कविताओं को देखना चाहिए। उनमें बाह्य एवं अंतर

के इसी तनावपूर्ण सम्बन्ध की पहचान है। कवयित्री प्रेम के मिथ को तोड़ती है। उसे अतीन्द्रियता के वायवीपन और ऐन्द्रीयता के ऐहिक धरातल से मुक्त कर उसके यातनापरक रूप को उजागर करती है। प्रेम को पाने की जितनी ललक है उतनी ही गहरी आशंका भी है। प्रेम एक साथ मुक्त भी करता है तो तोड़ भी देता है। यहाँ प्रेम के सभी रंग हैं–भरा–पूरा होने का अहसास और विरक्ति भरी रिक्तता। वह सुख भी है और यातना भी–

तभी उसका एक प्रेमी उसे बालों से पकड़
खींचता हुआ ले गया नींद और सपनों से बहार
समेटे हुए अपने सीने में चुराए उसके सारे फूल
जहाँ सब कुछ नया था उसकी यातना में 4.

यहाँ न शिकायत है, न रंज फिर भी यह प्रेम शिराओं में बहते लहू के चटकते दबाव का अनुभव बनता है। स्त्री कविता की प्रणेता रचनाकारों में प्रेम का यह अलग रंग, अलग टोन सविता सिंह की कविताओं में विशेषतः अनिवार्यतः महसूस किया जा सकता है।

स्त्रीत्व और प्रेम का अहसास एक गहरे दुःख से निर्मित है। दुःख और उदासी का यह संयत स्वर (melancholic undertone) एक बारीक संवेदन–तंतु की भांति कवियत्री की संवेदना का अभिन्न हिस्सा है। यद्यपि सचेत स्तर पर कवयित्री इस उदासी को निराशा में नहीं बदलने देती। प्रेम, अकेलापन, दुःख और फिर जीवन की नयी आशा का जो ग्राफ सविता की कविताओं में बनता है उसका विलक्षण उदाहरण है उनकी कविता 'प्रेम के बारे में' ५ इस कविता में वे सिल्विया प्लाथ का आह्वाहन करती हैं ५ सिल्विया का दुःख और अकेलापन, प्रेम की यातना का अनुभव केवल उसका निजी नहीं है उससे मानो दुनिया–भर की स्त्रियों की साझेदारी है। सविता अपनी कविता में उसे मुक्त कर देना चाहती हैं–

सिल्विया प्लाथ आओ
मेरी आत्मा में बसो
निश्चिंतता महसूस करो
× × × × ×
यहाँ दूर–दूर तक कोई पुरुष तुम्हें
इतना बेबस नहीं कर सकेगा अपनी क्रूरता से

कि तुम नष्ट हो जाओ
अपने प्रेम से नहीं मार सकेगा वह तुम्हें दोबारा
आओ और अपनी बाकी कविताएँ लिखो 5.

असमानता, यातना और संघर्ष के असंख्य बिंब यदि सविता सिंह की कविताओं का प्रस्थान बिंदु हैं तो मुक्ति का अहसास (केवल स्वप्न या आकांक्षा के स्तर पर नहीं) उसकी अनिवार्य परिणति एक बिंब जो उनकी कविताओं में बार–बार आता है वो उस स्त्री का है जो स्वयं को अपनी व्यथा से अलग कर रही है, जो नई हवाओं का संगीत सुनती है, अपनी गहरी प्यास को लाँघकर नदी के पास जाना चाहती है जहाँ एक नई दुनिया बनती है वह उदासी से आशा की ओर बढ़ रही है एक ऐसी दुनिया की ओर जो स्त्री के लिए अधिक सहृदय, करुणापूर्ण व मानवीय है जहाँ उसके लिए खुला आसमान और विस्तृत दिशाएँ हैं यह उसकी अपनी दुनिया है

स्वप्न और यथार्थ के बीच एक नए इलाके को तलाशती कवयित्री जिस दुनिया को रचती है उसमें एक आलोक–छुआ अपनापन है इस नई दुनिया का वर्णन अत्यंत कोमलता से किया गया है 'रात' और 'नींद' इसी कोमलता का प्रतीक हैं वास्तविक दुनिया की कठोरता ने स्त्री–संसार को जिस तरह घायल किया है सविता की कविताओं में नीम अँधेरे की कोमलता मानो उसके घावों पर मरहम का काम करती है रात, नींद, स्वप्न और एक गहरा नीला रंग यह स्त्री की उसी दुनिया का हिस्सा है जहाँ गहरी शांति और सुख का अहसास है यह उसका ऐसा एकांत है जहाँ बाहरी दुनिया की चीख–पुकार उस तक नहीं पहुँच पाती।

सविता की कविताओं की स्त्री इस नयी दुनिया को रचते हुए उसमें अपनी उपस्थिति बनाती है स्त्री कविता के मुहावरे के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है लेकिन यही उसका रोमान भी है कहना कठिन है कि ये कविताएँ खुरदरे यथार्थ की हैं या आशा–भरी रोमानियत की यह स्वप्न और यथार्थ के बीच का धूसर इलाका है जहाँ बहुत–से प्रश्न हैं और उन प्रश्नों के उत्तर पाने की बैचौनी भी (हाँ आघात और असमानता को दर्शाने वाले ठोस सन्दर्भ यहाँ नहीं दिखते) इस अर्थ में ये कविताएँ सहानुभूति और सदाशयता की रोमानियत में रंगी नजर आती हैं जहाँ हम ये कामना कर सकते हैं कि यह नयी दुनिया सच हो, संभव हो यह एक अलग तरह का रहस्यवाद है जहाँ अनुभव के स्तर पर जो है प्रेरित करता है, उदात्तता की अनुभूति भी जगाता है लेकिन इसे यथार्थ

बनाने के लिए जिस तरह का व्यापक सामाजिक हस्तक्षेप आवश्यक है वह अपनी पूरी तीव्रता के साथ उपस्थित नहीं हो पाता। कवयित्री को स्वयं यह अहसास है इसीलिए दुःख का अन्तःसूत्र यहाँ भी बराबर बना रहता है

वह पार उतर भी जाती है
जाती हुई दिखती है फिर उधर
जिधर प्रकृति है और हरीतिमा
नए परिधान उसके
जिनमें प्रसन्नचित्त वह पतीक्षा करती है
नए आघात की 6.

स्त्री अपनी व्यथा को त्यागकर जिस नई दुनिया की ओर बढ़ रही है वह उसके संघर्ष का अंत नहीं। किसी नए आघात की आशंका बनी रहती है क्योंकि शायद————

बनाये नहीं उसने वे पुरुष अब तक
ले सकें जो उसे बाँहों में 7.

इस पर भी, सविता के यहाँ स्त्री होना एक जिद्द की तरह है तभी उसे यह विश्वास है–

बदलेगा यह संसार अब स्त्री की कामना से ही
ईश्वर की नहीं इसमें अब कोई भूमिका 8.

यह अटूट विश्वास, स्वप्न, आकांक्षा और सत्य की मिलन–भूमि है जहाँ एक नई स्त्री–दृष्टि रूप और आकार ग्रहण करने लगती है। आत्मविश्वास से भरी स्त्री खुद को प्रेम करती है वह अपने जिस अस्तित्व को पहचानती है उसमें देह–मन–आत्मा सब शामिल हैं ५वह सबको दुलारती–सहलाती है, उस उर्जा के लिए जो उसे ऐसी शक्ति दे जिससे औरों के सहारे की जरूरत न रहे प्यह नयी स्त्री अपने वजूद के हर हिस्से से प्रेम करती है चाहें वो आत्मिक हो या दैहिक।

सदियों से स्त्री देह पुरुष के सौन्दर्य–बोध और सुख का निमित्त–मात्र रही है। सविता अपनी कविताओं में स्त्री देह को स्त्री–अनुभव–क्षेत्र में शामिल करती हैं –

देह सुख की नदी है
सहस्रों वर्षों से पता है

× × × × ×

कौन जान सकता है लेकिन
जैसे एक स्त्री जानती है देह को

× × × × ×

कि मुक्त कर सकती है वही
देह को देह से 9.

स्त्री स्वायत्तता के विमर्श में स्त्री–देह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है मुक्ति की अभिलाषा बहुत बार देह की स्वतंत्रता में परिभाषित की गई है। कथा साहित्य में तो बहुत–से रचनाकारों–आलोचकों ने इसे इसी तरह समझा। स्त्री शोषण की इस शाप्ग्रस्तता से मुक्ति यदि संभव है तो तभी संभव होगी जब स्त्री अपने देह पर अपने अधिकार को स्थापित करेगी और देह के दागों को अपनी आत्मा से अलग कर देगी। बाजार और मीडिया ने इस तर्क को जो आशय दिए वे हमारे सामने हैं देह का अधिकार पाने बढ़ी स्त्री स्वयं अपनी देह के वस्तुकरण की ढलान बन गई। अपने शिकार के षड्यंत्र को वह पहचान ही नहीं पाई इस सन्दर्भ में सविता सिंह की एक कविता याद आती है–

एक दिन वह सैर पर निकली–
एक समय बाद जैसे पेड़ गिरा देते हों अपने पत्ते
साँप अपनी केंचुल
मन गिरा देता है अपनी ही एक स्थिति
आत्मा दुःख
सहज ही वैसे गिरा दिया उसने
एक स्पर्श शरीर से
नया–नया सा फिर सब कुछ हो गया
कहीं कोई ग्लानि या क्षोभ नहीं उपजा 10.

इस कविता में यह भाव एक भिन्न धरातल पर अवस्थित है ৳ यह मुक्ति का वह अनुभव है जिसमें तमाम वर्जनाएं तोड़कर शरीर और मन दोनों सुखी होते हैं अनेक काव्य–पंक्तियाँ ऐसी भी हैं जिनमें रात और स्त्री के निर्वस्त्र होने की बात कही गई है–'निर्वस्त्र उसकी आत्मा उसी की हुई जाती है', या फिर 'जब रात उतार चुकी है अपने वसन' यह निर्वस्त्रता मात्र दैहिक नहीं, अपने ओढ़े हुए आवरणों से मुक्ति है। स्त्री ने समाज में अनेक रूप धरे हैं मानो स्वयं को सुरक्षित

रखने के लिए कई मुखौटे, कई आवरण ओढ़े हों पर जब वह अपने असली रूप की पहचान करेगी तो संस्कृति और समाज द्वारा दिए गए सभी चमकीले आवरण, भ्रम के पंख सब उतार फेंकेगी। 'नींद थी और रात थी' संग्रह कि कविता 'अद्वितीय नाच' इसी आशय की कविता है। 'स्वप्न समय' में यह यात्रा एक कदम और आगे बढ़ जाती है। वहाँ स्त्री 'स्वयंसिद्धा' है। वह अपने जिस रूप को अधिष्ठित करती है वह उसका पूर्ण अस्तित्व है जो काम और रति भी है, अनश्वर और ईश्वर भी ———

मैं स्वयं काम हूँ स्वयं रति
अनश्वर स्त्री
संभव नहीं, नहीं मृत्यु मेरी 11

यह स्त्री का नैसर्गिक रूप है जिसे डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी के शब्दों में कहूँ तो– "सविता सिंह ने अपनी कविताओं में स्त्री को जितनी सहजता से रखा है वह प्रकृति के बहुत करीब है" यानी स्त्री प्रकृति है तो फिर प्रकृति.....

सविता के यहाँ स्त्री के बाद जो दूसरा संवेद्य विषय है वह 'प्रकृति' ही है। प्रकृति के अनेक मोहक बिंब हैं–चिड़ियों की चहक, हवाओं का संगीत, रातरानी की महक, ओस की बूंदें, माँट्रियाल की बर्फ इन सबकी अनेक छवियाँ इन कविताओं में आशा का स्वर बनकर उभरती है। प्रकृति का खुलापन स्त्री मन की उन्मुक्तता का प्रतिबिम्ब बन जाता है। स्त्री संघर्ष की अनेक दास्तानों के बीच कवयित्री जिस नयी दुनिया की तलाश कर रही है प्रकृति उसी सदय दुनिया का विकल्प है। तारों और जुगनुओं से झलमलाती रातें स्त्री का वह एकांत रचती हैं जहाँ आशा, मुक्ति और अनश्वरता के स्वर एक साथ गूँज उठते हैं। इन कविताओं में प्रकृति का संसार स्त्री–संसार से जुड़ा हुआ है।

सविता की कविताओं में कुछ भी पूर्णतया निरपेक्ष नहीं है। सबका स्रोत स्त्री–संवेदना से कहीं न कहीं जुड़ा हुआ है। स्त्री और प्रकृति के बीच अन्तरंग संवाद बनने लगता है। कवयित्री प्रकृति का आह्वान करती है–

आओ समा जाओ मुझमें हवा
खेलो मुझसे
देखूं अपने चाँद, पहाड़, आकाश और चिड़िया
× × × × ×
मिल जाओ मुझमें या कि
मिला लो खुद में मुझे
एक वेग बना दो मुझे 12

प्रकृति से स्त्री के 'स्व' का एक और भी रिश्ता है ष्दोनों ही दमन के अनेक अध्यायों के बावजूद अपने अस्तित्व–सार को जिंदा बनाए रखने में समर्थ हैं ष जिस तरह कवयित्री स्त्री–इतिहास के पन्नों को खोल पीड़ा के अनेक रूप पहचानती है, उसी तरह उपभोग और बाजार के समीकरणों के बीच अमानवीय होते समाज के सोंदर्य–बोध को भी प्रश्नांकित करती है जो रचता नहीं मिटाता है–

मैं जरूर जानना चाहूँगी
तारे कैसे मरते हैं और क्यूँ
वृक्ष कैसे खोते हैं अपने वन
बच जाते हैं क्यों काटने और दरवाजा बनने के बाद भी
अस्तित्व के दाग उनके सुन्दर रेशे
चमकाया जाता है जिन्हें कुछ लोगों के सोंदर्य–बोध के लिए

'नींद थी और रात थी' संग्रह में कुछ कविताएँ भूमंडलीकरण से उपजी अर्थनीतियों में आत्महत्या करते किसानों के दुःख को उजागर करती थीं । 'स्वप्न समय' में कवयित्री जल–जंगल–जमीन के मानवाधिकार आन्दोलन, विस्थापन की राजनीति की ओर संकेत करती ह। बाजार का तर्क ताकत का तर्क है जहाँ सिर्फ 'फिटेस्ट' का 'सरवाइवल' होता है उसके बरक्स प्रकृति का तर्क सम–भाव एवं सह–भाव का है ष्प्रकृति के वृहद–वृत्त में छोटे–छोटे अदृश्य कीट–पतंगों के जीने और बचे रहने की अपनी व्यवस्था है यानी सब का अपना स्पेस है। सविता का कवि मन अपने स्त्रीवाद में उसी आदर्श को चुनता है फिर चाहे वह स्त्रियाँ हों, जन–जातियाँ, मिटाए जाते जंगल, प्राणी––सब के दर्द से रचनाकार की साझेदारी ह। जिस तरह यह दर्द कविता के मूल विषय में अनुस्यूत होता है वह मात्र पक्षधरता का सवाल नहीं रह जाता, गहरा संताप बन जाता है। कवियत्री दुःख की उस व्यापकता के अहसास को इंटरनलराइज (अंतर्ग्रथित) कर अपने सृजन के उत्स से एकाकार कर लेती है। स्त्री, प्रकृति और दमित समाज के अनेक चेहरे एक–दूसरे में घुल–मिल जाते हैं। वे पीड़ा बन कर फैलते हैं लेकिन जिस राग की सृष्टि करते हैं, वह सुखद भविष्य के विश्वास का है

आश्चर्य है उन्हें कि हैं कुछ लोग अब भी
जो जानते हैं मनुष्य को उसकी मनुष्यता में
कि मनुष्य होते हैं कुछ करने के लिए रचने के लिए कुछ सुन्दर

गोलियों से भून दिए जाने के लिए नहीं
हालांकि वे यह भी जानते हैं कि पीड़ा सहने से
जैसे बनता है जीवन का एक स्वर
वैसे ही प्रतिरोध करने से भी
तभी तो बच रही हैं कितनी प्रजातियाँ इस विश्व की
जैसे मुंडा, भील, गोंड, उराँव अपने देश की
जिनके दुखों से ही आँखों का पानी बना
जिनकी चीत्कारों से बनी तरह–तरह की आवाजें
बस गईं जो चिड़ियों, मेंढकों, हिरनों और
न जाने कितने दूसरे जीवों के कंठों में
जिन के थके बिंधे शरीरों से श्रम उपजा
नदियाँ, जंगल, खेत जिनकी सिसकियों से सींचे गए 14

स्वप्न का यह राग जीने की आकांक्षा है, मनुष्यता का वह आधार जिसे मिटाना आसान नही। ऐसी कविताओं में रचनाकार अपने लेखन को व्यापक मनावीय हित के प्रति समर्पित करता है। अस्मिता मूलक सीमित एजेंडा स्वयं ही निरस्त हो जाता है। स्वयं की तलाश सिर्फ निज तक सीमित नहीं, वह व्यक्ति को बृहद सामाजिक संरचना में पहचानने से बनती है। वह सब के लिए 'स्पेस' चाहती है और उस भरी–पूरी दुनिया में अपना एक कोना भी ऐसी रचनाओं में रचनाकार का स्त्री होना उसे एक अतिरिक्त सन्दर्भ देता है इसमें कोई दो राय नहीं

सविता सिहं की कविताओं का एक और महत्वपूर्ण पड़ाव 'कविता और भाषा' से जुड़ा है। कविता और भाषा दोनों ही कुछ नया और सुन्दर पा लेने का उपक्रम है। इन सभी कविताओं में भाषिक मुहावरे के दो अनिवार्य पदबंध हैं– 'पा लेना' और 'बदल देना'।

तुम्हें लिखना बदल देना है
इस जीवन को दूसरे जीवन से
एक स्वप्न को दूसरे से
या फिर इस जीवन को स्वप्न से 15.

सविता के लिए कविता का यह इलाका भी स्वप्न और यथार्थ के बीच अवस्थित है। एक ओर वे कविताओं में स्त्री जीवन के इतिहास को रचती,

उसकी मुक्ति के सपने को पा लेना चाहती हैं तो दूसरी ओर पूरी तरह खुद को कविता के हवाले कर सहज भाव से पूछती हैं– 'कहाँ लिए जा रही हो मुझे मेरी कविता'। कविता और भाषा दोनों कठिनाई से अर्जित की जाती हैं सतह पर जो जैसा है वैसा स्वीकार्य नहीं है उस में कोमलता और संवेदनशीलता के रंग घुल जाने देना जरूरी है जिससे मुक्ति का स्वप्न, कामना और आदर्श कविता में पुनर्जन्म की तरह एक नया रूप पा जाए। दर्शन में जिसे देह से विदेह होना कहते हैं सविता अपनी कविताओं में उसी साधना को पा लेना चाहती हैं। कवियत्री जिस 'स्व' को अर्जित करना चाहती है, सौंदर्य के जिस बोध को जगाना चाहती है कविता उसे उसके लिए 'स्पेस' देती है। यह उसकी निजी जमीन है जहाँ 'स्व' और 'सर्व' के दायरे घुलने लगते हैं और एक नया सत्य उद्‌भासित हो उठता है अधिक सुन्दर, अधिक मानवीय।

स्त्री जीवन की अभिव्यक्ति में उसकी भाषा का विशेष महत्व है। सविता सिंह की कविताएँ इसी भाषा में अपनी मुक्ति देखती हैं। कवयित्री ने निश्चित रूप से भाषा की साधना की है। इन कविताओं में कहने की आतुरता से भरा उच्छ्‌वास नहीं है बल्कि शब्द–शब्द को तराशता संयत आवेग है। कवयित्री किसी एक कविता में भी भाषा के प्रति असावधान नहीं होती और उस पर अनेक परतीय संवेदना का स्वरुप जिन कविताओं को जन्म देता है उनके लिए कवयित्री का दावा है–

मुझसे भी जटिल जीवन जियेंगी मेरी कविताएँ

× × × × ×

इतने वर्षों बाद भी मेरी कविताएँ अचंभित नहीं होंगी
तब भी उन्हें यह संसार अनुपम ही लगेगा अपनी क्रूरता में
तब भी वे ढूंढेगी प्रेम और सहिष्णुता ही इस संसार में 16.

इस तरह, सविता सिंह की कविताओं का संसार हमारे सामने दुनिया के जिस रूप को प्रस्तावित करता है वह वैकल्पिक दुनिया का स्वप्न है। आज हम जिस दुनिया में साँस ले रहे हैं उस पर हिंसा और आक्रामकता का पहरा है। सारी सामाजिक संरचनाएँ सत्ता के पदानुक्रम खड़े करती हैं जहाँ एक ताकतवर है तो दूसरा लाचार, एक शासक, दूसरा शासित। मनुष्य हो या प्रकृति सब इस द्वंद्वात्मकता की गिरफ्त में कैद नजर आते हैं ऐसे समय में किसे बचाना स्पृहणीय होगा– इस बड़े सवाल का जवाब हमें इन कविताओं में मिलता है।

प्रेम, सहिष्णुता, संवेदनशीलता को बचाने का आग्रह मनुष्य के पूरे बोध को बचाने का आग्रह है। हिंसा की वर्चस्वशाली ताकतों के सामने सिर झुकाए बगैर एक ऐसी दुनिया की कल्पना करना जहाँ कोमलता और उजास बचे रह सकें इन सभी दृष्टियों से सविता सिंह की स्त्री– कविता मानव–मात्र के दुःख और उससे मुक्ति की कविता बन जाती है उनकी प्रस्तावित वैकल्पिक दुनिया केवल स्त्री के आँसू सोखने का विधान नहीं रचती वहाँ हर कमजोर, उपेक्षित के दर्द को सर उठा कर खड़े होने का साहस मिलता है। इस अर्थ में यह कविता 'जेंडर के लेंस' से मुक्त हो जाती है। कवयित्री एक व्यापक स्तर पर व्यक्ति और समाज के संबंधों की पुनर्व्याख्या करने के लिए स्वयं को उस पूरी प्रक्रिया से सम्बद्ध करती है। उसकी प्रश्नाकुलता समाज की सभी दिशाओं को आंदोलित करती है लेकिन वह जिस बिंदु पर बार–बार टिकती है वह निश्चित रूप से 'जेंडर आधारित' व 'जेंडर निर्मित' है। सविता ने स्वयं को 'स्त्रीवादी' घोषित किया और हमने उस विशेषण को नाकाफी माना क्योंकि उसका एजेंडा 'पर्सनल–पोलिटिकल' के सीमित दायरों का अतिक्रमण करता है ।

सविता की कविताओं की संवेदना गहरी वैचारिक उर्जा से गढ़ी गई है। ये विचार स्त्री को लेकर उनके (वर्ल्ड–व्यू) विश्व–दृष्टि से पैदा होते हैं। इसीलिए यह स्त्री–दृष्टि कविता के हर क्षेत्र में हस्तक्षेप करती है। उसे लेकर चिंता भी है और आमूल परिवर्तन की चाह भी। सारी स्थिति पर गहरा दुःख भी है और मुक्ति की आकांक्षा भी। यह आकांक्षा ही स्वप्न को जन्म देती ह। स्वप्न जो मुक्ति की चेतना बनता है– एक वैकल्पिक दुनिया, वैकल्पिक विश्व–दृष्टि जो संभवतः 'जेंडर न्यूट्रल' दुनिया तक ले जा सके। सपनों की तरलता जेंडर के इस पाठ को मानवीय अनुभव में बदल देती है और कविता नारा होने से बच जाती है। इन कविताओं में जेंडर के ये सवाल जिस तरह उठे थे उससे यह आशंका भी बनी थी की यह कविता कहीं स्त्री के इतिहास, संघर्ष या उस के अधिकारों की पक्षधरता का ऊपरी शोर बन कर न रह जाए लेकिन सविता सिंह ने उस सीमा का अतिक्रमण किया। उन्होंने कल्पना, संवेदना और विचार के समुच्चय को साधकर उसे मानवता का ऐसा सवाल बना दिया है जो दर्शन और रहस्य की पराकाष्ठा तक पहुँचता है। साहित्य परंपरा में उस का मूल्य इस बात से निश्चित होगा की चिंता और चिंतन की यह सलवटें किस तरह का सक्रिय हस्तक्षेप कर पाएँगी जिससे कविता में सविता जिसे पाने की जिद्द करती हैं उसे हम सामाजिक स्तर पर भी अर्जित कर सकें

सन्दर्भ

1. मैं किसकी औरत हूँ, अपने जैसा जीवन पृ.– 40–41
2. बैठी हैं औरतें विलाप में, अपने जैसा जीवन पृ.33
3. मैं कथा कहूँगी, नींद थी और रात थी पृ. 24
4. अपनी यातना में, नींद थी और रात थी पृ.26
5. प्रेम के बारे में, नींद थी और रात थी पृष्ठ–27
6. आघात, स्वप्न समय पृ. 20–21
7. ईश्वर और स्त्री, स्वप्न समय पृ. 89
8. ईश्वर और स्त्री, स्वप्न समय पृ. 89
9. जैसे एक स्त्री जानती है, नींद थी और रात थी पृ.–52
10. एक दिन वह सैर पर निकली, नींद थी और रात थी पृ.– 140
11. चाँद, तीर और अनश्वर स्त्री, स्वप्न समय पृ.–107
12. ऐ हवा, स्वप्न समय, पृ.–15
13. उस बूढ़े कवि की तरह, स्वप्न समय, पृ.– 37
14. स्वप्न के ये राग, स्वप्न समय पृ 119–120
15. तुम्हें लिखना, स्वप्न समय, पृ 39
16. कविता का जीवन, नींद थी और रात थी पृ 91

○○